

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में : एल०पी० शाही की भूमिका

विनय कुमार भूषण

इतिहास विभाग, आई०डी०कॉलेज, मुजफ्फरपुर, बी०आर०ए०बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

1917 से 1947 तक का काल भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण और चरम काल कहा गया है। 1917 में गाँधी जी ने बिहार के चम्पारण से अंग्रेजों के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन की शुरुआत किया था। गाँधी जी के नेतृत्व में भारतवर्ष में यह पहला सत्याग्रह आन्दोलन है। उस समय गाँधी जी अफ्रीका से सत्याग्रह आन्दोलन में सफल होकर भारत आये थे। गाँधी जी को चम्पारण बुलाने का श्रेय राज कुमार शुक्ल को जाता है। कहानी यह है कि चम्पारण में अंग्रेजों द्वारा निल की खेती करने वाले किसानों पर निलहा साहबों द्वारा तीन कठिया कानून के तहत किसानों के तीन कट्ठा के उपज में से एक कट्ठा का पैदावार अंग्रेज की कोठी पर पहुँचाने का कानून चल रहा था। नहीं देने पर निलहा साहब प्रतारित करता, दमन शोषण करता था जिसके विरुद्ध किसानों में असंतोष उभर रहा था।

समाज में क्रान्ति भुख और प्यास से होती है, मगर उससे भी बड़ी क्रांति तब होती है जब आदमी में अमन का भरोसा कम हो जाता है। चम्पारण के किसानों को अमन का भरोसा टुट जाता है तो वे एक ऐसे नेतृत्व की खोज करते हैं जिसके लीडरशीप में निलहा साहबों के विरोध में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रांति करे। पूर्वी चम्पारण में राज कुमार शुक्ल ने बतौर एक किसान इस कानून का विरोध किया जिसके कारण अंग्रेज कोठी के सिपाही ने उन पर चाटा मार कर प्रहार किया था। राज कुमार शुक्ल ने प्रण किया कि चम्पारण से जब तक अंग्रेजों को नहीं भगायेंगे तब तक चम्पारण नहीं लौटेंगे। चम्पारण में किसानों का कहना था कि खेती वाली जमीन राम नगर स्टेट का है जो जमीन का टैक्स नहीं लेता है और यह अंग्रेजों का ठेकेदार, पट्टेदार और कोठी का सिपाही मुफ्त में तीन कट्ठा में से एक कट्ठा का पैदावार ले लेता है जो अन्यायपूर्ण है। यहीं से किसानों और ब्रिटिश कोठीदारों से संघर्ष शुरू होता है। राज कुमार शुक्ला द्वारा तीन कठिया कानून का विरोध और उन पर अंग्रेजों के प्रहार ने इस संघर्ष की आग में घी पटा दिया और इसकी ज्वाला लिये राज कुमार शुक्ला कांग्रेस के 31वें अधिवेशन में लखनऊ पहुँच जाते हैं जहाँ गाँधी जी से उन्होंने भेंटकर चम्पारण आने का न्योता दिया, आग्रह किया। गाँधी जी ने उन्हें कलकत्ता आने का प्रोग्राम बताया और फिर कलकत्ता से चम्पारण चलने की बात कही। राज कुमार शुक्ला 14 अप्रैल को निर्धारित तिथि को कलकत्ता पहुँच जाते हैं और गाँधी जी को लेकर पटना आये वहाँ से मुजफ्फरपुर होते हुये चम्पारण पहुँचते हैं जहाँ 17 अप्रैल को निल किसानों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध गाँधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह किया जाता है। गाँधी जी को ब्रिटीश हुक्मत के एस०डी०ओ० द्वारा चम्पारण से वापस जाने को कहा जाता है, सलाह दी जाती है। नहीं तो उन पर मुकदमा चलाने और सजा देने की धमकी भी दी जाती है। गाँधी जी सजा स्वीकार करना पसन्द करते हैं और चम्पारण नहीं छोड़ने का संकल्प लेते हैं। जब तक ये जूर्मी कानून बन्द नहीं होगा तब तक आन्दोलन जारी रखने की घोषणा करते हैं। यहीं से बिहार में गाँधी जी का गाँधीवादी आन्दोलन शुरू होता है। उसी आन्दोलन के बाद उन्हें महात्मा की संज्ञा मिलती है। इस आन्दोलन और गाँधी जी के प्रभाव से

बिहार के किसानों में जागृति आती है। बिहारी किसानों का अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने में मनोबल बढ़ता है। अंग्रेजों के अत्याचार और क्रूरता के विरुद्ध बिहार के किसान जागृत हो जाते हैं। उनकी मानसिकता पर गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन का प्रभाव किसानों और पढ़े-लिखे बुद्धिजीवियों तथा हिन्दुस्तानी भावना और जमीर के जमीन्दारों द्वारा गाँधी जी में विश्वास व्यक्त कर आन्दोलन को धार देकर तीव्र गति से आन्दोलन करने की योजनाएँ बनायी जाती है। इस वातावरण का प्रभाव शाही जी के पिता योगेन्द्र प्रसाद शाही के मन मस्तिष्क पर भी पड़ता है और वे राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत होकर राष्ट्र की चिन्ता करते हैं। अंग्रेजों के विरुद्ध सभी प्रकार के संघर्ष और लड़ाई में उनकी रुची रहती थी। श्री योगेन्द्र प्रसाद शाही अपने पिता काली प्रसाद शाही के जमीन्दारी के उत्तराधिकारी थे। 1920 से 1921 ई० में गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन चलाया था। जिसमें उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी और वे राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर गाँधी जी के आन्दोलन में सक्रियता दिखायी।

जिस व्यक्ति का पेट खाली होगा उसे भूख की चिन्ता सतायेगी भला वह व्यक्ति राष्ट्र की क्या चिन्ता करेगा। व्यक्तिगत और पारिवारिक आवश्यकता की पूर्ति अपनी जमींदारी या व्यवसाय से जिस व्यक्ति की हो जायेगी उसी में राष्ट्रीय भावना आयेगी वही व्यक्ति राष्ट्र की चिन्ता कर सकता है। योगेन्द्र प्रसाद शाही चुकि सम्पन्न जमीन्दार थे इसलिये वे स्वाधिनता संग्राम में रुची रखते थे। “होनहार वीरवान के होत चिकने पात” वाली कहावत चरितार्थ होती है। श्री योगेन्द्र प्रसाद शाही की रुची राष्ट्रीय आन्दोलन से थी। इसी बीच 1920 के 01 अक्टूबर को संध्या 7 बजे एल०पी०शाही का जन्म होता है। एक जन्मजात क्रांतिकारी मानवतावादी व्यक्तित्व का जन्म और आगे का उनका कर्तव्य यह सिद्ध करता है कि वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। अर्थात् शाही जी के जन्म के वर्ष 1920 से स्वतंत्रता के वर्ष 1947 और भारतीय गणतंत्र को लागू करने के वर्ष 1951 तक का काल शाही जी के लिये राष्ट्रीय चेतना को आत्मसात करने या राष्ट्रीय भावना से प्रभावित होने, गाँधीवादी आन्दोलन से प्रेरित होने का काल कहा जा सकता है। यह काल शाही जी के व्यक्तित्व निर्माण का काल है इस काल अवधि में उनके पिता की मांसिकता और गाँधी जी के जीवन दर्शन एवं आन्दोलन के तौर-तरीकों ने शाही जी को बहुत अधिक प्रभावित किया। अपने बचपन से हीं शाही जी आन्दोलनकारियों का ड्रेस पहनते थे। (जमुनिया रंग का वर्दी हाफ पैंट-हाफ सर्ट) इसी वर्दी में गाँव में हीं अंग्रेजी राज के खिलाफ नारा लगाते थे। जमुनिया रंग का कपड़ा खान अब्दुल गफकार खाँ (सिमान्त गाँधी) जिन्हें खुदाई खिदमतगार कहते थे वे भी पहनते थे। इस प्रकार शाही जी की पहचान बचपन में हीं और लड़कों से भिन्न थी। 1932 ई० में गाँधी जी जब अनशन पर बैठे इसके बाद अम्बेडकर के साथ पुना पैकट हुआ तो एक दिन के लिये शाही जी ने भी उपवास किया तब इनका उम्र मात्र 12 साल का था। एक बार गाँधी जी मुजफ्फरपुर आये थे उस समय शाही जी का उम्र कम था। गाँधी जी का प्रथम दर्शन शाही जी ने ट्रेन से गोरौल जाकर मुजफ्फरपुर स्टेशन पर किया। गाँधी जी मुजफ्फरपुर जब ट्रेन से आये तो शाही जी ने देखा कि ट्रेन से एक बुढ़ा आदमी उतरा, जिसने घुटने के ऊपर धोती पहन रखी थी और ऊपर के खाली बदन को ढ़कने के लिये उस धोती के आधा को चादर नुमा ओढ़ रखी थी। उस व्यक्ति के कमर में धोती से एक घड़ी लटक रही थी वह व्यक्ति हीं गाँधी जी था। गाँधी जी अपने दर्शन के लिये आये भीड़ को दो चार मिनटों तक सम्बोधित किया था। इस प्रकार पैत्रिक गाँधीवादी विरासत और अपने बचपन में गाँधी जी का दर्शन ने शाही जी को काफी प्रभावित किया और मन मस्तिष्क पर राष्ट्रीय भावना काम करने लगी। बचपन का छात्र जीवन और स्कूल शिक्षा तो गाँव साईन में हुयी लेकिन हाई स्कूल की शिक्षा मुजफ्फरपुर बी०बी०कॉलेजिएट स्कूल से सन् 1938 में मैट्रिक पास किया। इस बी०बी०कॉलेजिएट स्कूल में इन्होंने स्टुडेंट फेडरेशन द्वारा आयोजित हड़ताल का नेतृत्व कर सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। 1940

में ये छात्र संघ के निर्वाचित सदस्य हो गये और छात्र जीवन से ही अंग्रेजों के विरोध आन्दोलन को धारदार बनाकर स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने लगे। Student federaton की मिटिंग में 1938 में पटना गये तो वहाँ इन्हें चन्द्रशेखर सिंह जैसे कॉमरेड से भेट हुयी। उस समय Student federaton साम्यवादी दल से जुड़ा था। बाद में 1940 में छात्र संघ का बँटबारा हुआ तो शाही जी Student congress में चले गये।

भारत से ब्रिटीश साम्राज्य को समाप्त करने के उद्देश्य से द्वितीय विश्व युद्ध के समय महात्मा गांधी ने 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन में “करो या मरो” का नारा दिया और आन्दोलन की धार को तेज कर दिया। क्रिप्स मिशन का रिपोर्ट आ चुका था। रिपोर्ट को दो भाग में योजना बद्ध किया गया था। एक भाग तत्काल लागू होने वाला था। दूसरा भाग द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् की परिस्थितियों से संबंध रखता था। 29 मार्च 1942 को दिल्ली पहुँचकर क्रिप्स ने भारतीय नेताओं से विचार-विमर्श शुरू किया और सांविधानिक गतिरोध का अंत करने के उद्देश्य से प्रस्ताव रखा। क्रिप्स ने अपनी योजना में बताया कि ‘ब्रिटिश सरकार भारत की रक्षा का भार अपने विश्व व्यापि प्रयत्नों के एक अंग के रूप में अपने हाथ में रखेगी, परन्तु प्रमुख भारतीय दलों के नेताओं को अपने देश, ब्रिटिश राष्ट्र मंडल तथा मित्र राष्ट्रों के सलाह-मशवरे के लिये तुरन्त और प्रभावोत्पादक ढंग से भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जायेगा।

क्रिप्स का जो प्रस्ताव था वह भारतीयों को मान्य नहीं था। यह भारतीयों की मांग के समर्थन में नहीं था। क्रिप्स प्रस्ताव के संतोषजनक नहीं रहने के कारण मौलाना आजाद जो उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे क्रिप्स प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। गांधी जी भी क्रिप्स प्रस्ताव से असहमत थे। उसका अधिकांश भाग या प्रस्ताव भारतीयों को मानने योग्य नहीं था। अतः विदेशी हुकुमत को हटाने, ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने के लिये भारतीयों के पास धारदार आन्दोलन के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

कांग्रेस भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए कठिबद्ध थी। पूर्ण स्वतंत्रता के बिना वह संतुष्ट नहीं हो सकती थी। अधिकांश राजनीतिक दलों ने क्रिप्स के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। 11 अप्रैल 1942 को क्रिप्स अपने सुझाव और प्रस्ताव के साथ लौट गया। इस प्रकार देखा जाये तो ब्रिटिश सरकार का इरादा भारतीयों को वास्तविक सत्ता हस्तान्तरित करने का नहीं था। फलतः देश, निराशा, निःसम्बलता और व्यग्रता के गर्त में डुब गया। जबाहर लाल नेहरू ने लिखा है – “जनता की निपट निराशा को साहस और प्रतिरोध की भावना में बदलना आवश्यक था। यद्यपि यह गतिरोध उत्पन्न करना ब्रिटिश अधिकारियों के स्वेच्छाचारी आदेशों के विरुद्ध होता लेकिन आक्रमणकारी के विरोध में भी परिवर्तित किया जा सकता था। निराशा और दासता दुसरे की ओर भी इसी दृष्टिकोण को और इसी प्रकार की दीनता/दासता और तुच्छता को उत्पन्न कराती है। इन सभी घटना क्रमों पर शाही जी की पैनी नजर थी।

अप्रैल 1942 से गांधी जी ने अहिंसात्मक आन्दोलन का रास्ता छोड़कर उग्रता पूर्वक सोंचना शुरू कर दिया। भारत छोड़ों का विचार गांधी जी के मस्तिष्क में जमने लगा और उन्होंने उसे “हरिजन” नामक पत्रिका में एक लेख लिख कर प्रकाशित किया। गांधी जी के दिमाग में यह विचार उत्पन्न होने लगा कि अंग्रेजों से भारत को खाली कराया जाना आवश्यक है क्योंकि वे भारत में रहकर भारत पर जापानी आक्रमण को प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। गांधी जी की धारणा बनती जा रही थी कि अंग्रेजों को न केवल भारत वरन् समस्त एशिया और अफ्रीका से अपने साम्राज्य की समाप्ति कर देनी चाहिए और वापस ब्रिटेन चला जाना चाहिए। गांधी जी की धारणा हो गयी थी कि इस समय शान्त भाव से रहना अथवा अन्याय सहना कायरता होगा। उन्होंने कहा कि क्रिप्स का प्रस्ताव अंग्रेजों की मंशा को उजागर करता है। अंग्रेजों की मंशा भारतीयों में विभाजन पैदा करना है जब वे भारत को छोड़कर चले जायेंगे तब भारतीय हिन्दु-मुश्लिम मिलकर अपने देश

की रक्षा स्वयं कर लेंगे। जुलाई 1942 के मध्य में वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुयी जिसमें एक प्रस्ताव पास कर गाँधी जी के इस विचार का समर्थन दिया गया। 01 अगस्त 1942 को इलाहाबाद में तिलक दिवस मनाया गया। इससे पंडित नेहरू ने कहा कि “हम आग के साथ खेलने जा रहे हैं। हम दोधारी तलवार का प्रयोग करने जा रहे हैं, जिसकी चोट से हम भी लहू-लुहान हो सकते हैं। लेकिन हम विवश हैं हमारे पास दुसरा कोई चारा नहीं है।” डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने एक भाषण में कहा कि “हमें इस बार गोली खाने और तोप का सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिए”। सरदार पटेल ने बम्बई में कहा कि “इस बार का आन्दोलन थोड़े दिनों का लेकिन बड़ा भयानक होगा।” इस प्रकार कांग्रेस के उच्च कोटि के नेताओं के द्वारा जनता को यह आभास होने लगा कि कांग्रेस की ओर से एक भीषण आन्दोलन चलाने की व्यवस्था की जा रही है। जनता का मनोबल बढ़ता जा रहा था तथा दृढ़ होता जा रहा था। एल०पी० शाही जैसे राष्ट्रीय भावना से प्रेम रखने वाले नौजवान लोग उद्घेलित हो रहे थे। उनके हृदय में इस वातावरण के प्रभाव से अंग्रेजों को भगाने और स्वाधीनता प्राप्त करने की ललक तेज होती जा रही थी।

7 अगस्त 1942 को कांग्रेस महासमिति की बैठक बम्बई में हुयी। 8 अगस्त को महात्मा गाँधी ने समिति के समक्ष अपना ऐतिहासिक प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव में उन्होंने कहा कि—“भारत में ब्रिटिश शासन का अंत भारत तथा मित्र राष्ट्रों के लिये अत्यंत आवश्यक है। इसी पर युद्ध का भविष्य तथा स्वतंत्रता और प्रजातंत्र की सफलता निर्भर है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटि पुरे आग्रह के साथ ब्रिटिश सत्ता को हटा लिये जाने की मांग को दोहराती है। आधुनिक साम्राज्यवाद का केन्द्र बिन्दु भारत अब इस समस्या का मुख्य विषय बन गया है। अंग्रेजों के चले जाने के बाद देश के प्रमुख राजनीतिक दलों तथा वर्गों से एक अस्थायी सरकार का निर्माण किया जायेगा जिसका मुख्य उद्देश्य अपनी सैनिक तथा अहिंसात्मक शक्ति के प्रयोग से विदेशी आक्रमण के विरुद्ध की सुरक्षा करना होगा।

चुकी यह आशा की जा रही थी कि अंग्रेज भारत छोड़कर आसानी से नहीं जायेंगे, अतः एक जन आन्दोलन भी चलाने का निश्चय किया गया जिसकी तिथि की घोषणा नहीं की गयी थी। गाँधी जी का विचार था कि आन्दोलन शुरू करने से पहले एक बार सरकार से बात कर लेना चाहिए। यह वार्ता अन्तिम वार्ता होगी। इस अवसर पर महात्मा गाँधी ने एक युगान्तकारी भाषण दिया। इन्द्र विद्यावाचस्पति का कहना है कि गाँधी जी उस रात ऐसे बोल रहे थे ‘मानो अन्तरात्मा से भगवान बोल रहे हो। पट्टाभिसीता रमैया का कहना कि “वस्तुतः गाँधी जी उस दिन अवतार तथा पैगम्बर की प्रेरक शक्ति से प्रेरित होकर भाषण कर रहे थे। उनके अन्दर आग धधक रही थी। गाँधी जी उस दिन राजनीति के निम्न धरातल से उपर उठकर उत्कृष्ट मानवता, विश्वव्यापी भातृत्व शांति तथा मानव के प्रति सद्भाव से परिपूरित होकर दिव्यलोक की चर्चा कर रहे थे।’’ कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पारित कर दिया।

कांग्रेस महासमिति में दिये गये अपने भाषण में गाँधी जी ने घोषणा की थी कि इस बार का संघर्ष –“करो या मरो” का संघर्ष होगा। यह लड़ाई खुली और अहिंसक लड़ाई होगी। उन्होंने घोषणा की कि आन्दोलन शुरू करने से पहले वे वायसराय से मिलेंगे और मित्र राष्ट्रों से अपील करेंगे लेकिन सरकार ने उन्हें इसके लिये समय नहीं दिया। सरकार की ओर से दमन करने के लिये सारी योजनाएँ तैयार थीं और सरकार ने कांग्रेसके गाँधी जी आदि सारे दिग्गज नेताओं को 9 अगस्त को हीं गिरफ्तार कर लिया। कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया और नेतागणों को चारों ओर धर-पकड़ शुरू कर दिया गया।

भारत छोड़ों प्रस्ताव को सरकार पसन्द नहीं करती थी। सरकार की ओर से एक विज्ञप्ति समाचार में प्रकाशित की गयी उसमें कांग्रेस के कार्यक्रम का उल्लेख था। विज्ञप्ति के अनुसार रेल पटरियों को तोड़ना, टेलीफोन-टेलीग्राम की लाईने काटना सार्वजनिक भवनों को ध्वस्त करना आदि कांग्रेस के कार्यक्रम का एक

योजना छपा था। इस प्रकार नेताओं को जेल में बंद करके विज्ञप्ति का प्रकाशन करके उल्टे सरकार ने जनता का नेतृत्व कर दिया। अधिकांश जनता ने इसी विज्ञप्ति को अपना कार्यक्रम समझा। उसने सरकार के नीति के विरुद्ध प्रदर्शन के अभिप्राय से जुलूस निकाले, सभाएँ की तथा हड्डतालों का आयोजन किया। स्वस्फूर्त आन्दोलन प्रारंभ हो गया। सरकार ने प्रदर्शनकारियों के साथ कठोर व्यवहार किया। बाध्य होकर जनता को हिंसात्मक कार्य पर उत्तरना पड़ा। उसने तार और रेल की लाईनें तोड़ना तथा सार्वजनिक भवनों को जलाना आरंभ कर दिया। शाही जी के सामने सुभाष चन्द्र बोस की आक्रामक नीति भी थी और गाँधी जी का सत्य अहिंसा सत्याग्रह की नीति। शाही जी ने गाँधी नीति अपनाई लेकिन सरकार का हर स्तर पर विरोध किया।

शाही जी भी साईन गाँव से पैदल चलकर गाँव के कुछ लोगों के साथ फकुली के सामने पुरब केशरावाँ रेल पटरी उखारने के लिये रात में गये थे। फकुली के यादवों ने इन लोगों को रोक दिया फिर साधु शरण शाही और अन्य लोगों की मदद ली। इस कार्य में लोगों में सुभाषचन्द्र बोस के कार्यों से काफी प्रेरणा मिली। सुभाषचन्द्र बोस आजाद हिन्दू फौज का गठन कर जापान के साथ हो गये थे और वर्मा के तरफ से आक्रमण करने की योजना बना रहे थे। रेडियो से उनका प्रचार प्रतिदिन हो रहा था और वे विद्रोह के लिये भारतीयों को उभार रहे थे।

ललितेश्वर प्रसाद शाही एल०एस०कॉलेज से 1942 में बी०ए० पास किया। पुनः अगस्त 1942 में गाँधी जी ने करो या मरो का नारा दिया और अंग्रेजों भारत छोड़ों आन्दोलन में ये 11 सितम्बर, 1942 को रैली जूलस लेकर 90 मिल का परीक्रमा करते हुये लालगंज थाना को घेरने पहुँचे तो थाने से कुछ दूर पहले हीं इन्हें 16 व्यक्ति के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और हाजीपुर जेल भेज दिया गया। वहाँ से इन्हें मुजफ्फरपुर फिर मुजफ्फरपुर से 14 सितम्बर को पटना के फुलवारी कैंप जेल में भेजा गया। एक वर्ष के बाद फुलवारी कैंप जेल से इन्हें हजारीबाग सेन्ट्रल जेल भेजा गया। इस प्रकार शाही जी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़ चढ़कर प्रत्यक्ष रूप से अपनी भूमिका निभाने लगे। इन्हें पटना कैंप जेल और पुनः हजारी बाग जेल भेज दिया गया। शाही जी की तब तक शादी हो चुकी थी। गया जिला के एक सम्प्रान्त परिवार में इनके ससुराल के लोग इन्हें जमानत पर रिहा होकर जेल से निकलकर चले आने की बात कहने गये थे। इन्होंने इनकार कर दिया और जेल में रहते हुये इन्होंने संवाद दिया, कहा कि जब तक देश आजाद नहीं होगा तब तक लड़ता रहूँगा। जमानत लेकर जेल से बाहर नहीं निकलूँगा। उस समय हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में बाबू जगत नारायण लाल भी थे जो प्रथम एसेम्बली के समय चुने गये थे, उन्होंने शाही जी को सजा के विरुद्ध अपील करने की सलाह दी। शाही जी अपील करने से इनकार कर गये। उस समय श्रीबाबू भी उसी जेल में थे उन्हें किसी ने जाकर कहा कि मुजफ्फरपुर का एक लड़का जेल में आया है जो इस तरह की बातें करता है। इस पर श्री बाबू ने शाही जी को बुलबाया और बातें की। श्रीबाबू शाही जी की बात से काफी प्रभावित हुये। श्री बाबू से शाही जी की जेल में पहली मुलाकात एंव घनिष्ठता हुयी। शाही जी के साथ जेल जाने बालों में वैशाली जतकौली के बिन्दा सिंह, मदरना वैशाली के होमियापैथ प्रैविटसनर दुर्गा सिंह, पौनी वैशाली के शिवशंकर त्रिपाठी, नवादा वैशाली के राम निरंजन दुबे, नामीडीह लालगंज के सरयुग सिंह, लालगंज घटारो के जुनियर टी०पी० सिंह के परिवार के एक सदस्य, घटारो के हीं बिन्दा सिंह, रामदेव सिंह, रामविलास सिंह, घनुषी के हरिवंश कुँवर, मरिचा सराय के सूर्यवंशी प्रसाद, कर्ताहां के चन्द्रधारी प्रसाद, परमेश्वर सिंह, उसी इलाके के वासुदेव खलीफा इत्यादि कई लोग एक साथ जेल गये थे। इस प्रकार “अंग्रेजों भारत छोड़ा” आन्दोलन में इन्होंने प्रमुख भूमिका निभायी। जेल में इन्होंने ढाई वर्षों तक यातनाएँ सही।

जेल से लौटने के बाद भी इनकी राजनीतिक आन्दोलन की गतिविधि रुकी नहीं यद्यपि इन्होंने वकालत की पढ़ाई करने पटना लॉ कॉलेज में चले गये और 1945 में लॉ की डिग्री प्राप्त कर ली। पढ़ाई के

साथ शाही जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन की हर गतिविधि से अपने को जोड़े रखा। इनके सम्पर्क का दायरा बढ़ता गया। महेश बाबू के सानिध्य में आ गये। लॉ की पढ़ाई करके 1946 ई० में इन्होंने मुजफ्फरपुर में वकालत शुरू किया। कुछ हीं दिनों में शाही जी ए०पी०पी० बन गये। वकालत के साथ राजनीतिक गतिविधि बनाये रखा और श्री बाबू एवं गाँधी जी के विचारों का प्रभाव इनके मन मस्तिष्क पर पड़ा और इसी विचारधारा के तहत राष्ट्रीयता की भावना से ये काम करने लगे। 1946 में जिला परिषद् के चुनाव में वे जिला परिषद् के सदस्य निर्वाचित हो गये और मुजफ्फरपुर सिविल कोर्ट में साथ-साथ वकालत भी करते रहे। 1949 में ये जिला परिषद् में उपाध्यक्ष निर्वाचित हो गये। यद्यपि 1948 में ही ये बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के सदस्य बन गये। मनुष्य के व्यक्तित्व का निखार परिस्थिति एवं वातावरण के साथ अपनी बुद्धि और श्रम को जोड़ने के प्रयास पर भी निर्भर करता है। शाही जी को सामाजिक कार्य करने और देश भक्ति की ओर झुकाव शुरू से ही रहा है। छात्र संघ में सक्रिय भूमिका हाई स्कूल से हीं अदा करते रहे। उन्होंने इस तथ्य को सुसंस्कृत और दुसरों को समुन्नत करने के प्रयोजनों के लिये ईश्वर की ओर से उन्हें भेजा गया था। हजारीबाग जेल में हीं श्री बाबू के सानिध्य में आकर शाही जी ने आन्दोलन के क्रम में ही देश प्रेम, राष्ट्रीय और मानवीय मूल्यों की रक्षार्थ अपने को तैयार कर लिया और दृढ़ प्रतिज्ञ होकर कर्तव्य पथ पर चल दिय। ‘करो या मरो’ आन्दोलन में जेल यात्रा शाही जी के जीवन का टर्निंग प्वाईट कहा जायेगा। पढ़ाई में कुछ समय के लिये व्यवधान तो हुआ लेकिन सभी बाधाओं को झेलते हुये इन्होंने अपने वकालत की पढ़ाई का लक्ष्य पूरा किया। वकालत करते हुये भी वे कचहरी में राष्ट्रीय भाव के संवाद से हीं अपने साथियों के बीच समय जाया करते थे। हर हाल में स्वाधीनता चाहिए यह मिशन शाही जी का बरकरार हो गया। इस बीच जो सामाजिक दायित्व या जबाबदेही मिली, जिला परिषद् में काम करने का उसका भी उन्होंने बखुबी निर्वहन किया। इसी का प्रतिफल था कि सरकार के निर्णयानुसार जिले में जहाँ 25 बेसिक स्कूल खोले जाने थे शाही जी ने इसे आन्दोलन का स्वरूप देकर लोगों से जमीन दान में लेकर 25 की जगह 65 बेसिक स्कूल और दो पोस्ट बेसिक स्कूल खोलकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी काम किया। शाही जी का मानना था जब तक लोग शिक्षित नहीं होंगे राष्ट्रीय भावना को नहीं समझेंगे और तब तक स्वाधीनता प्राप्त नहीं होगी। इस प्रकार शाही जी ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रियता के साथ मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु कार्य किया।

संदर्भ

1. बनते बिहार का साक्षी, एल०पी०शाही, श्री कृष्ण शिक्षा प्रतिष्ठान, पटना।
2. आधुनिक बिहार में राजनीतिक चेतना –प्रो० (डॉ०) रत्नेश्वर मिश्र–बिहार इतिहास परिषद्, 2014
3. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास–डॉ० दीनानाथ वार्म, स्टुडेन्ट फ्रेण्ड्स, गोविन्द मित्र रोड पटना–800004
4. बिहार में स्वतंत्र आन्दोलन का इतिहास–डॉ० कालिंकर दत्त, प्रकाशक–बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी कदम कुंआ, पटना'800003
5. राजनीतिक सिद्धान्त एवं विचार–डॉ० डी०एस० यादव–रजत प्रकाशन, असांरी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली।